

सम्मान

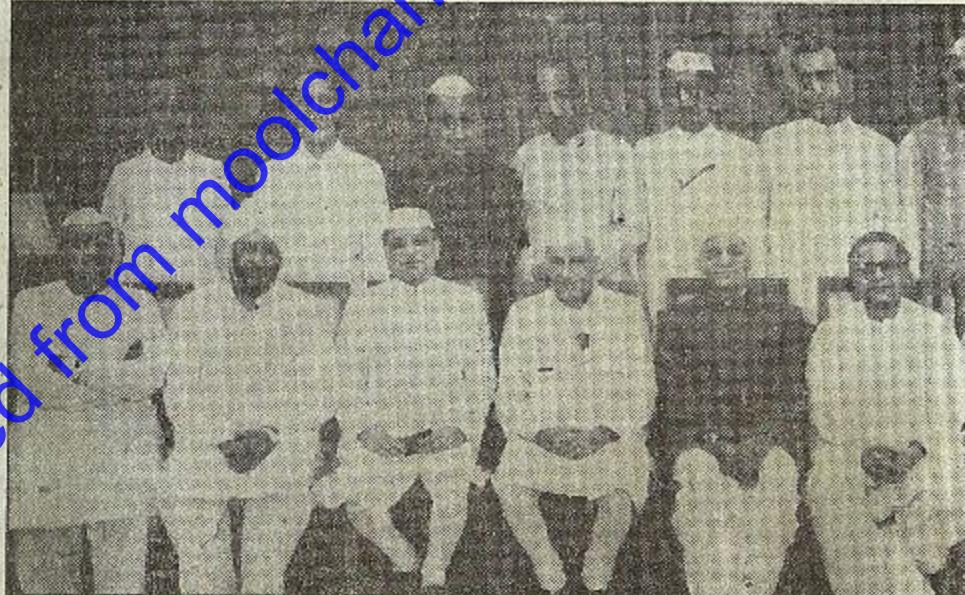
जेहन में आज भी जिंदा हैं मूलचंद जैन

...बाकी यही निशां होगा

सेनानियों ने किया था अंग्रेजों का लगान बंद

आज समाज नेटवर्क

करनाल। शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का बाकी यही निशा होगा।। देश को स्वाधीनता दिलाने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की श्रद्धा में देश आज भी नतमस्तक है। एक ओर जो शहीद-ए-आजम भगत सिंह और चंदशेखर आजाद की कांतिकारी गतिविधियों को यहां सेल मिला तो वहीं दूसरी ओर ओजो हुक्मत को लगान न देने की शुरुआत इसी भूमि से हुई। सेनानियों के पराक्रम की बदौलत यहां से भागे गोरों ने फिर भारत माता की ओर आंखें उठाकर नहीं देखा। आजादी के दो सौ रणबांकुरों ने लहू से भारत की मिट्ठी को संचित है। उन रणबांकुरों में ऐसे ही एक थे गांधीवादी विचारक बाबू मूलचंद जैन। उनका जन्म 20 अगस्त 1915 को हुआ था। उन्होंने 1940 में सत्याग्रह आंदोलन की



जवाहर लाल नेहरू के साथ लाला मूलचंद जैन।

ऐसी अलख जलाई कि अंग्रेजों की हवाइयां उड़ गई। स्वतंत्रता सेनानी रणबीर सिंह हुड्डा के नेतृत्व में उन्होंने गिरफ्तारी दी। देश के प्रति उनके भाव में सर्वाधिक समय व्यतीत किया। आजादी के बाद वर्ष 1957 में वे कैथल सीट से जीतकर लोकसभा पहुंचे। उनकी बदौलत दर्जनों शहरों में स्मारक व संग्रहालय बने। 1931 में गोहाना हाईस्कूल से 10वीं की परीक्षा में उन्होंने पूरे स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्होंने आंखे मूंद ली।

बंसीलाल ने साती गतिर्थी

1975-77 तक इमरजेंसी के दोसरा उन्हें जेल में रहना पड़ा। उन्हें परोल पर जाने को कहा गया, लेकिन इस निषेध को न मानते हुए उन्होंने 19 महीने जेल में ही बिताए। उनका स्पष्ट कहना था कि प्रजात्र खत्म कर परिवारवाद लाया जा रहा है। वे इसे सहन नहीं करते। बंसीलाल ने एक सम्मेलन में साफ किया था कि लाला मूलचंद जैन को उन्होंने जेल में डाला, लेकिन सत्ता में आने के बाद भी उन्होंने उनका बुरा नहीं बहा।